का आदर करें। माननीय प्रधान मंत्री जी जब विरोधी दल के नेता थे, मैंने तब से लेकर अभी तक उनकी बातों को बहुत सुना है। वह कभी जिद नहीं करते थे। परन्तु अब आप जिद्दी हो गए हैं। अब जब वह संसद सत्र में आएं तो जिद छोड़ कर पूरे हाउस के माननीय सदस्यों की भावनाओं का आदर करें और अवैध रूप से प्रस्तुत किए गए महिला आरक्षण विधेयक को वापस लें।

अध्यक्ष महोदय, हमने आपके हुकम का पूरा-पूरा पालन किया है। मैं आपके निर्देश का पालन करता हूं और इसीलिए आपके ऊपर किसी प्रकार की कोई टिप्पणी नहीं कर रहा हूं। आपने इस सदन को अच्छा चलाया है लेकिन सत्ता में बैठे इन लोगों ने ठीक से चलने नहीं दिया, इस बात को इन लोगों को समझाइये।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली) : अध्यक्ष महोदय, इस सम्पूर्ण सदन की यही राय है कि उससे यथा संशोधित बिल रहना चाहिए जिसमें ओ.बी. सी., अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति और माइनौरटीज की सभी महिलाओं को पूरा हक मिलना चाहिए। मैं नहीं समझता कि क्यों सत्ता पक्ष के लोग इसका विरोध कर रहे हैं। आज तो सब लोग खुल गये हैं।

[अनुवाद]

श्री पी.एच. पांडियन (तिरुनेलवेली) : महोदय, पिछड़े वर्गों के आरक्षण पर भी एक संशोधन होना चाहिए...(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री राशिद अल्वी (अमरोहा) : अध्यक्ष महोदय, मेरी गुजारिश है कि ओ.बी.सी. को उसमें शामिल किया जाये।

श्री जी.एम. बनातवाला (पोन्नानी) : स्पीकर सर, मैंने बाकायदा नोटिस देकर आपको भेजा था...

अध्यक्ष महोदय : मैंने आपके नोटिस के बारे में आपका नाम बुलाया था।

श्री जी.एम. बनातवाला : हम बाकायदा नोटिस देकर आपके सामने आते हैं और अपनी बात रखनी चाही लेकिन हमारी बात सुनी नहीं जाती। इस वक्त भी मैंने नोटिस दिया हुआ है कि यह मोशन जो इंट्रोड्यूस किया गया है, सही नहीं, इसलिये इग्नोर किया जाए।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपना स्थान ग्रहण कीजिए। मैंने आपका भी नाम पुकारा है। कृपया इसे समझिए।

[हिन्दी]

श्री जी.एम. बनातवाला : आप हमें अंडरस्टैंड नहीं कर रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय : आप पहले बैठ जायें।

अपराह्न 5.37 बजे

विदाई उल्लेख

[अनुवाद]

श्रीमती सोनिया गांधी (अमेठी) : अध्यक्ष महोदय, हम एक संक्षिप्त लेकिन अति महत्वपूर्ण सत्र के अंत में आ पहुंचे हैं। सभा में महत्वपूर्ण कार्य किया गया। देश और लोगों के हितों को अपने दिल और दिमाग में सर्वोपरि रखते हुए हमने कुछ कानूनों को पारित करने में सरकार को समर्थन दिया। साथ ही, जब हमें लगा कि कुछ प्रस्ताव कमजोर हैं तो हम उनके विरुद्ध दृढ़ता से खड़े रहे। जहां प्रस्ताव कमजोर थे, हमने कुछ संशोधनों के लिए सुझाव दिया जिसे विधेयक में समाविष्ट किया गया।

अध्यक्ष महोदय, आपका कार्य सबसे कठिन और जिम्मेदारी का कार्य है। हमारा लोकतंत्र सर्वाधिक जीवंत है जिसका प्रदर्शन कई अवसरों पर सभा में हो चुका है। ऐसे कई अवसर आए हैं, विशेषकर पिछले दो दिनों में, जब कुछ सदस्यों ने लक्ष्मण रेखा को पार किया। तथापि, आपने सदस्यों के साथ सहनशीलता और दयालुता के साथ बर्ताव किया। इस प्रकार का व्यवहार हम सब के साथ करने के लिए हम आपके आभारी हैं।

हम नई सहस्राब्दी में लगभग प्रवेश करने ही वाले हैं। आइए हम अपनी शपथ दोहराएं कि, जिन्होंने हमारा समर्थन किया, जिन्होंने हमें वोट दिया, जिनका हम प्रतिनिधित्व करते हैं हम उनकी सुरक्षा, उत्थान, भलाई और कल्याण के लिए पुनः सच्चे दिल से कार्य करें।

महोदय, मैं आपको पुनः धन्यवाद देना चाहती हूं।

मैं आपके माध्यम से माननीय प्रधान मंत्री को, उनकी सरकार को और सभा में प्रत्येक व्यक्ति की, सभा के प्रत्येक सदस्य को मैं अपनी और अपनी पार्टी की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं, नए वर्ष की मुबारकबाद और नई सहस्राब्दी की शुभकामनाएं देना चाहती हूं।

[हिन्दी]

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : अध्यक्ष महोदय, वर्तमान सत्र समाप्ति पर है। यदि पूरे सत्र पर नजर डालकर देखें तो जहां तक कानूनों का सवाल है, इस सत्र में हमने काफी कानून बनाये हैं। विधायी कार्य में शायद पहली बार इतना योगदान मिला है। यह सबके सहयोग से संभव हुआ है। विशेषकर प्रतिपक्ष के सहयोग से। दूसरे सदन में हमारा बहुमत नहीं है। कुछ महत्वपूर्ण विधेयक जो पारित हुए हैं वह प्रतिपक्ष के सहयोग से हुए हैं, इसके लिए सरकार आभारी है। सचमुच में जब हम प्रतिपक्ष में थे तो इसी तरह का रचनात्मक रवैया अपनाते रहते थे। दो दिन जो कुछ हुआ है अगर वह टाला जा सकता था और अच्छे ढंग से बात कहने का तरीका निकाला जा सकता, तो मैं समझता हूं कि सदन की गरिमा बढ़ती, भारतीय लोकतंत्र अधिक बलशाली होकर निकलता। जब सत्र आरम्भ हुआ था तो मैंने आश्वासन दिया था कि इस सत्र में हम महिला आरक्षण विधेयक लायेंगे, उसे इंट्रोड्यूस करेंगे और फिर विचार के लिए वह

विधेयक प्रसारित होगा। विधेयक का शब्द अंतिम शब्द नहीं है। लेकिन लोगों के साथ किये गये आश्वासन को पूरा करने की भी एक जिम्मेदारी थी। विधेयक पेश हो गया...*(व्यवधान)*

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली) : कहां हुआ...*(व्यवधान)* नहीं हुआ।

अनेक माननीय सदस्य : नहीं हुआ, नहीं हुआ।...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अच्छा होता अगर और अच्छे वातावरण में विधेयक पेश होता।

श्री मुलायम सिंह यादव (सम्भल) : प्रधान मंत्री जी वातावरण ठीक करिये, अब ऐसा सवाल मत उठाइये। बिल पेश नहीं हुआ है। अब आप जो कर रहे हैं, अब इस तरह से मत आइए। आप अच्छा वातावरण बनाइये।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अब आप भी ऐसा...*(व्यवधान)*

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : यह सत्तापक्ष की तरफ से अफवाह है कि किया जा रहा है...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइये।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : आर.एस.एस. के रयूमर्स स्प्रैडिंग सोसाइटी के लोग ऐसा कह रहे हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : बीच में टोका-टाकी न तो यह चौड़े दिल और न चौड़ी छाती की परिचायक है।

श्री मुलायम सिंह यादव : प्रधान मंत्री जी, आप तो टिप्पणी करने लगे, हम समझते थे कि सदन का वातावरण ठीक करेंगे।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी :अध्यक्ष महोदय, विधेयकों पर विवाद होते हैं और उन विवादों में से रास्ता निकाला जा सकता है। मैंने सर्वानुमति की बात कही थी, कान्सेन्सस की और कान्सैन्सस स्थापित करने का प्रयास हुआ। अभी मुझ पर जिद्दी होने का आरोप लगाया जा रहा था। यह दो दिन में पता लग गया कि कौन जिद्दी है, कौन सबके साथ चलने को तैयार नहीं है...*(व्यवधान)* अध्यक्ष महोदय, इस सिद्धांत का कोई विरोधी नहीं है कि महिलाओं के लिए आरक्षण होना चाहिए। मतभेद इस बात पर है कि 33 प्रतिशत हो, 15 प्रतिशत हो या 20 प्रतिशत हो।

श्री मुलायम सिंह यादव : दस पर नहीं है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मतभेद इस बात पर है कि चुनाव की प्रक्रिया क्या हो। क्या सीटों की अदला-बदली हो या रोटेशन हो। हमारे पुरुष सदस्यों को यह चिन्ता है कि जिन सीटों पर वे जीत कर आये हैं वे कहीं उनके लड़ने लायक भी न रहे, जहां से वे खड़े न हो सकें। कहीं ऐसी परिस्थिति पैदा न हो जाए, इसका हल निकाला जा सकता है। अभी चुनाव कमीशन एक और हल लेकर आया है। मुलायम सिंह जी अच्छे-अच्छे सुझाव देते रहे हैं और अगर वह कोशिश करेंगे तो उनके अच्छे सुझाव अभी थोड़े लोग मानते हैं, ज्यादा लोग मानने लगेंगे।

अध्यक्ष महोदय, और अगर नहीं मानेंगे तो दूसरों के जो सुझाव होंगे वे मुलायम सिंह जी मानने लगेंगे। कोई न कोई रास्ता निकालना ही पड़ेगा और सब मिलकर रास्ता निकाल सकते हैं। यह संसार का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। अध्यक्ष महोदय, मैं 40 साल से यहां हूं। जो घटनाएं पिछले दो दिनों में हुई हैं, ऐसी घटनाएं पहले कभी नहीं हुई थी और न कभी आगे होनी चाहिए। धक्का-मुक्की की नौबत आ जाए, बाहर जाकर हम अपना क्या मुंह दिखाएंगे, बड़े दुख की बात है, लेकिन अब समाप्ति हो रही है। अन्त भला तो सब भला।...*(व्यवधान)*

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : इसकी जिम्मेदारी सरकार पर है। इतनी हठधर्मिता सरकार की तरफ से दिखाया जाना कि जो बिल तैयार है, उसी को इंट्रोड्यूस करेंगे। पंचायत की मानेंगे, लेकिन खूंटा वहीं गाढ़ेंगे। इसमें कसूर किसका है, सरकार की जिम्मेदारी है।...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : खाली सरकार नहीं, सरकार के साथ पूरा प्रतिपक्ष भी शामिल है, आपको छोड़कर।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : रघुवंश प्रसाद जी, इतनी जोर से क्यों बोलते हैं। आप कृपया बैठ जाइए।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, आपको हम सचमुच में धन्यवाद देना चाहते हैं। 'बालयोगी' के रूप में आपने जिस गंभीरता का प्रदर्शन किया है, वह प्रशंसनीय है। हमें तो यह सोचते हुए चिन्ता होती है कि अगर आप 'बालयोगी' की जगह 'पूर्णयोगी' हो गए, तो फिर साधारण जन का क्या बनेगा। आपने पूर्ण कुशलता से सदन का संचालन किया। सदन अच्छे वातावरण में समाप्त हो रहा है। मैं प्रतिपक्ष को धन्यवाद दे चुका हूं। प्रतिपक्ष की नेत्री श्रीमती सोनिया गांधी को, अन्य राजनीतिक दलों के नेताओं का भी मैं आभार व्यक्त करता हूं। लोक सभा सचिवालय को अतिरिक्त काम करना पड़ रहा है, कठिन स्थिति का सामना करना पड़ा है। उसके सदस्यों को भी मैं धन्यवाद देता हूं।

अध्यक्ष महोदय, आप तो हमारे सबके धन्यवाद और आभार के पात्र हैं ही, मैं आपको और पूरे सदन को अपनी ओर से नए वर्ष की शुभकामनाएं देता हूं और नए मिलेनियम की भी शुभ कामनाएं देता हूं। जब हम मिलेंगे, तो अच्छे वातावरण में मिलेंगे और दो दिन जो कुछ हुआ, उसकी याद भुलाकर मिलेंगे।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : अध्यक्ष महोदय, नियम 5, 221, 243, 245 को देखिए।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : नहीं, नहीं। रघुवंश प्रसाद जी, इस समय कुछ कहने की जरूरत नहीं है। कृपया बैठिए।

...*(व्यवधान)*